आत्म-कथ्य

रामतिया मत तोड के पश्चात् था जमीन आपणी व परभाती काव्य सग्रह प्रकाशित तो हुये लेकिन मेरी प्रिय विधा गीतो का सग्रह प्रकाशित होने म काफी लम्बा अ तराल रह गया। इस बीच पत्र पत्रिकाओ मे, दूरदशन, आकाशवाणी व कवि सम्मेलनो मे कई गीत लोकप्रिय हुये मगर उ ह पुस्तक रूप देने में विलम्ब हुआ मगर मेरे उत्साही सहयोगियो ने इस सग्रह (कुण कुण ने विलमासी) को शीघ्र प्रकाशन की जो व्यवस्था की मैं उ ह हृदय से ध यवाद ज्ञापित करना चाहता हू। खासतौर से श्री क हैयालाल जी सिलवाल श्री महावीरसिह जी खगारोत, व अ य मेरे अनेको प्रशसक जिनकी प्रेरणा से मुझे आत्मबल मिला। मुझ विश्वास है कि आप सभी शुभ चि तकों व राजस्थानी भाषा के प्रबल समथको को यह सग्रह पस द आयेगा।

— कल्याणसिह राजावत

कुण कुण नैं बिलमासी

कल्याणसिंह राजावत



राजावत प्रकाशन
चितावा हाउस,
53, शिल्प कॉलोनी,
झोटवाड़ा, जयपुर-12

प्रकाशक
राजावत प्रकाशन
चितावा हाउस,
53, शिल्प कॉलोनी,
झोटवाड़ा, जयपुर-12 (राजस्थान)

□

प्रथम सस्करण, 1989

□

मूल्य–पैंतीस रुपये

□

मुद्रक
रसकपूर प्रिन्टर्स
दीनानाथजी का रास्ता, जयपुर



स्नेहशील ठाकुर मगलसिह
भदलिया

नैं घणैं नेह सू

—कल्याणसिह राजावत

दृष्टि प्रस्तुति

भाव को जीना और उसके चितराम उतारना आम आदमी का नाम नही है। आम आदमी मे विशिष्ट प्रतिभा अनुभूति के सयाग से अभिव्यक्ति की कला पाती है, तब ही कुछ बात बन पाती है और वह बात आम आदमी की होती हुई भी आम से बढकर होती है यानि कि खास बात। वह खास बात अपनी अस्मिता स हर आम को आ दोलित करती है। ऐसी ही आन्दोलन की वृत्ति राजस्थानी के मधुर कवि श्री राजावत मे हैं जिस पर आम आदमी मुग्ध है। राजावतजी के अनेक गीत सग्रह प्रकाशित हो चुके है, इन गीतो की भाव प्रवणता तथा अनूठी अभिव्यक्ति ने सामा यजन क हृदय को झकृत कर दिया है।

प्रस्तुत सकलन 'कुण कुण नैं विलमामो' का मगलाचरण ही जीवन की सटीक व्याख्या क रूप म है जा आस्था और यथाथ का मूल श्लोक है—

समरथ हो समझा तो ऊमर ई ऊमर है।
नाचा तो जिनगाणी घूमर ई घूमर है॥ [जिनगाणी]

मानव जीवन सुख दु ख, हष शाक राग-द्वेष आदि सभी अ तद्व द्वा से मुक्त हो सकता है यदि अनासक्त भाव स जीता है तो जीवन म नत्य ही नत्य है अर्थात् जीवन की साथकता है। जीवन के सनातन रहस्य को सहज भाव स अभिव्यक्त किया गया है। श्री राजावत ने सरल, सीध और स्वाभाविक रूप स गीतो क माध्यम स अनकही, अनछुई बातो का कहकर दिशाबोध दने का किया है जा स्पृहनीय है। छोटे छोट शब्दा म उक्ति वचित्र्य की विदग्धता है। जीवन म कम के प्रति आस्था आवश्यक है विरासत की पू जी से गति नहो है। कवि न कहा है—

गवाही इतिहासा री देर,
उगाही कद ताई करसी।
बुरजडो हुई भाखरा ढेर,
चिणाई अब किया करसी॥

कवि यथाथ के प्रति आग्रहशील है तो आदश की पगडडी पर भी चलना चाहता है। रसभरे शृगारिक गीता मे स्वच्छ दता की भावना नही है ता व मन

न प्रति व्यामोह भी नहीं। शृंगारिक गातो म कवि दृष्टि प्रमाद स ही सार्थकता स्वीकार लेना है। अपन आत्मसंकल्प इच्छा, कम और क्रिया के समन्वित रूप के न संदम म कहता है—

जितरी जडा जमी म होसी, उतरी साख बधीजला,
जितरी रूई कनरण राख, उतरा सूत कतीजला।

अपने कम की फलाप्ति भाग्य पर नहीं छोड़ता अपितु स्वयं के दायित्व क प्रति ही आग्रह है। वैयक्तिक अनुभूतियो मे समष्टि के सुख दुख, हर्ष शोक, उल्लास कुण्ठा का द्वंद्व जीता हुआ कहता है—

सूरज इसरो ना सिलगाव, पण तारा उतपात कर।

जहाँ शृंगार, प्रकृति एव सौदय क मनोरम प्रतिबिम्बो को शब्दचित्र मे उतारा है वहा समाज क सघष न प्रति अनदेखी की भावना नहीं है। नारी के अस्तित्व की सुन्दर समीक्षा की गई है—

भगती री गणगौर हू
सगती री सिरमौर हू।

समाज क साथ साथ राजनीतिक-पर्यावरण के प्रति अपनी आशका को जन्म दिया है—

बो झूठो, बो सांचो कोनी, कुण पर करा भरोसो कैया।
राजनीति दल म्हारी निजरा, मझुवारा है जाल भायला॥

श्री राजावत का कवित्व सवतामुखी है, जीवन क वैयक्तिक एव सामाजिक पक्ष को उजागर करते हुए राष्ट्रीय चिन्तनधारा के प्रति सजग है। भाषा म सहज आंचलिकता तथा आकर्षण तो कवि का वशिष्ट्य है। इस सकलन का शीर्षक ही 'कुण कुण नै विलमासी" कविता की सार्थकता है। मैं समझता हू कि कवि का अपना अस्तित्व है और अपनी अभिव्यक्ति धारा मे हटकर है, जो अभिनन्दनीय हैं।

आचाय उमेश शास्त्री
विभागाध्यक्ष संस्कृत
पारीक कालज, जयपुर

अनुक्रमणिका

जिनगाणी

समरथ हो समझा तो ऊमर ई ऊमर है
नाचा तो जिनगाणी घूमर ई घूमर है,

काटा तो सस्तर है
सील्या तो ग्रस्तर है
पील्या तो समदर है
करल्या तो कमतर है

इण रा रूप ग्रणू ता है
ग्रज हू ई ग्रणकू ता है
ग्रोढा तो जिनगाणी चूनड ई चूनड है

ग्रांभै रो पाणी है
धरती रो धाणी है
किण री तो जाणी है
किण री ग्रणजाणी है

सुरता सार ग्रदीठी है
बळती भळा ग्रगीठी है
थाका तो जिनगाणी डूगर ई डूगर है

जोवन रा झाला है
मदभरिया प्याला है
समझा तो इमरत है
अण समझया हाला है

इण रा नैंण नसोला है
इण रा बैण रसोला है
निरखा तो जिनगाणी मूमल ई मूमल है

पायल झणकारां है
गीता गणकारा है
काजल री कोरा है–
मैंदी रतनारा है

आ तो काण कनोरा है
आ तो बानें बनोरा है
पैरा तो जिनगाणी झमर ई झमर है

बेलडी

वीणी बीच बेलडी, पसरवा लागी
सोरम सारे बायरे, विखरवा लागी

चेतो राखी हाळो माळी
आ है सोने रो सू डाळी
है रे रुपा सू रुपाळी
इणरी राखीज रुखाळी
चढगी डोळो डागळ, इतरवा लागी

ताता जाळा सा फैलावे
आता जाता ने उळझावे
भवरा भोळा ने भरमावे
स्याणी सवरे जो सरसावे
काया ताता दूध सी, ईफणवा लागी

उडता पंछी रो मन डोले
झांक मीठो धीमे बोल
कोमल फूलां वे सुर तोल
बोली प्रीत भरी सै बोले
भवरा का ई कानडा, कतरवा लागी

अळियां-गळियां घूमर घाले
सैना-सैना मे समझाले
नैणा नैणा सू बतळाले
यजवण वेजा ही बहकाले
लाजा मरती आगणो, कुचरवा लागी

जोबन हैं

गोरी ! थारै नैणा मे मदसाळ-जोबन है
गोरी ! थारी वाणी वैण रसाळ-जोबन है

जै जीवण जोबन नी होतो
(तो) सपनो साचो नीं होतो
सास सलूणी ही रह जाती-
प्रीत दिवलियो ही बुझ जोतो

गोरी ! थारा उळझ-सुळझै बाळ-जोबन है
गोरी ! थारी गजमस्ती री चाल-जोबन है

जै भवरो बागा नी जातो
(तो) फुलडो यू ही मुरझातो
सौरम री मरजादा घटती-
रूप कवारो ही रह जातो

गोरी ! थामे फूला री फुलवार-जोबन है
गोरी ! थारी काया ही कचनार-जोबन है

जै रग रा ब्योपार न होतो
(तो) रूत री रूजगार न होतो
रग रगिया भव सागर तरता-
बदरग वेडो पार न होतो

गोरी ! थारा अंग अंग रंग साळ–जोबन है
गोरी ! थारा अधरा मिसरी थाळ–जोबन है

जै जग मे सिणगार न होतो
(तो) जीवण मे सार न होतो
काजळ टीकी रै बिन फीको–
अंग रहतो–अणगार न होतो

गोरी ! थामे पायल री भणकार–जोबन है
गोरी ! था में मिलणै री मनवार–जोबन है



फूल सूं बातां करणी हैं

जलम रो जोबन है ज्यूं हार
प्रीत रो सीमा सूं ओपार
तार में सौरम रो संगीत–
मीत सूं बातां करणी है
फूल सूं बातां करणी है

आगण-आगण खणकै कागण, भणभण री भणकार रै
कामण-कामण, मरवण मामण, गजबण हद सिणगार रै

गुमानण घूंघट री दरकार
छोडता हुवै घणा रिझवार
हार मत, रमलें रागा रीझ–
रीत री राता रगणी है
फूल सूं बातां करणो है

होळै–होळै इमरत घोळ, ढोळै रस री धार रै
भोळै–भोळै भाव भकोळै, रोळै रंग गुलाल रै

मुळकता ई माना मनवार
नैण में नसो चढ सो वार
द्वार पर ऊभा करां उडीक–
ठीक रंग मांग भरणी है
फूल सूं बातां करणी है

सरवर सरवर गागर-गागर हंस वतळावण पाळ रै
तरवर तरवर तन मन तर-भर मनभर हींडै डाळ रै

सास में चदण री भैंकार
दिखावो चादे रै उणिहार
लाज रो लस्कर थमग्यो तीर–
नीर नद हाया तरणी है
फूल सू बाता करणी है

सावण–सावण लगै सुहावण, मावण कामणगार रे
फागण–फागण सखी सुहागण, ग्रावण–जावण द्वार रे

नींद नी ग्रावे सारी रात
पूछ ले काजळ सू परभात
गात रो गुघळै नितरै रूप–
घूप तो सासा भरणी है
फूल सू बाता करणी है

गोरी–गोरी नाच–नचोरी बागा री कचनार ग्रे
जोडी–जोडी नेह–निगोडी मौसम री मनवार ग्रे

ग्रावसी फेर नहीं मधुमास
रचालें रळ रस भीणो रास
सास रो सागो है दिन च्यार–
बार नी लाजा मरणी है
फूल सू बाता करणी है

—★—

हेत बजार में

विकग्या हेत बजार मे हिवडे रे ब्योपार मे
सारा हीरा मोती म्हे, खो दिया गुवाड मे

क्यू तो हा मराजाण मे
क्यू हा नवी पिछाण मे
छलिया पूं जी लेयग्या
इण ई खीचाताण मे
बोणा बीज बहार मे, बो दिया उजाड मे
सारा हीरा मोती म्हे खो दिया गुवाड मे

इतरा लाग्या सातरा
भूल गया से आतरा
नैणा बीच मडीजग्या
चितराम कितरी भातरा
जोणा दिवला देवरै, जो दिया उघाड मे
सारा हीरा मोती म्हे, खो दिया गुवाड मे

बाता नही बुहारणी
घाता नही सवारणी
जोवण प्यास पिछाणलै
पडता नही उघाडणी

भूला मूल गवाइयो, कचन गयो उधार मे
सारा हीरा मोती म्हे, खो दिया गुवाड मे

मानो हर मनवार नैं
समझी अपणी धार नैं
लहरा नावा छोड दी-
भूल गया पतवार नैं

रह्या किनारा आतरा, उळझ गया मझधार मे
सारा हीरा मोती म्हे, खो दिया गुवाड मे

—o—

जोबन मत जा रे

सपना सिरजण हार जोबन
सेजा रा सिणगार जोबन
रूपा रा रिझवार जोबन थमज्या रे
प्रीत री पतवार जोबन मत जा रे

मद रो आधा प्यालो है रे पीवण दे
घूंघट हाळो झालो है रे जीवण दे
सावण सुगणी आलो है रे भीजण दे
सपनो रूप रूपाळो है रे छीजण दे

झूमर रा अवतार जोबन
देवा रा दरबार जोबन
मोसम री मनवार जोबन थम ज्या रे
मैफल री मतवाळ जोबन मत जा रे

काया री कचनार कळी न सेवण दे
दरप घणो है डीला दरपण दमकण दे
सजता साज सिंगार सरूप समेटण दे
उळझण सूं हद हेत हेत मे उळझण दे

कचन रा कळदार जोबन
समदर सा सळदार जोबन
झळ बळता झळकार जोबन थम ज्या रे
फळ-फूला फळदार जोबन मत जा रे

सातू सुर मे राग रागणी गावण दे
पगा-पगा मे पायलडो खणकावण दे
रुत रगियो रग रूप अनूप रिझावण दे
फूल्या अणहद फूल महक ढुळकावण दे

उनमादो उणियार जोबन
मद छकिया सिरदार जोबन
मनमथ री झणकार जोबन थम ज्या रे
गजबण रा गळहार जोबन मत जा रे

दो छिण रो ओ मेळो है रे देखाला
रामत रळियो रैळो है रे बहकाला
बाग-बाग मे सौरम सागे महकाला
कठ-कठ मे कोयल सागे चहकाला

अगा रा अणगार जोबन
ताकत री तरवार जोबन
अचपळिया अधकार जोबन थम ज्या रे
अवलख रा असवार जोबन मत जा रे

थारी पूजी ले

प्रीत विना ओ जलम अधूरो-थारो पूजी ले
किण री करा रूखाळ अेकला-ताळा कूजी ले

सई किती सवार अवेरी
काया काच जडी
मळमळ न्हाया, मलमल पैरी
फठा फूल लडी
दरपण मूं नित हस बतळाया
अबखो वाण पडी
पळ मे फागण धूम मचातो
पळ मे मेघ झडी

पळ पळ रै पळका सूं थाम्या थारी पूजी ले
किण री करा रूखाळ अेकला ताला कूजी ले

मन मे रैवे बात "क कोई
मीठी बात करै
नैण सैण रा दिवला बातो
सारी रात बळै
आभा रै आकास सलूणो
चादो नही ढळ
कदे न मुरझै सौरम सेतो
इसडो फूल फळ

सपन विना सा नीद अधूरी-थारो पूजी ले
किण री करा रूखाल अेकला-ताळा कूजी ले

कुण कुण नै बिलमासी

कातर-कातर ओढण सूं कढ
सारो डील ढक
तिणकै तिणकै री तपती कद
खदबद खोच पकै
हर उड़ती पाख्या रै सागै
उडिया पाख थकै
हर बसी रै सागै सागै
नाच्यां नही धिकै
घाट-घाट पर जा-जा थाक्या थारी पूजी ले
किण री करा रुखाळ श्रेकला ताळा कूजी ले

देवलिया सै धोक धापिया
अब किण नै पूजा
आखर अरथ अलेखूं राखे
आखर सू धूजा
जिण मूरत रा दरसण करिया
मिली नही दूजा
कुण भरमाई कुण ले भाग्या
अब कुण नै बूझा
धार नही रस सार नही बस थारी पूजी ले
किण री करा रूखाळ श्रेकला ताळा कूजी ले

बीज में बरकत होगी रैं

कळी फूल मे रूप बदलगी
भवरा री सा बात समभगी
देखो रुत रो अेक अचम्भो

दावडी दरखत होगी रैं
बीज मे बरकत होगी र

नुगरो पवन कुचरणी गारो
हर भाकै निरख उणियारो
भासा रो आकास पसार्‌यो

निजर तो सरवत होगी रैं
बीज मे बरकत हागी र

तन गी तिरस जेठ री जरती
जुगा जुगा मू रगी परतो
प्रीत मेघ र अक हब,ळ

बूद सू तिरपत हागी र
बीज मे बरक्त हागो र

मूघा हावै हस बतलाणो
लागा र ब्रिच कुवद कमाणा
दगा जग रो वात बणाणा

काक्री परवत हागी र
बीज मे बरक्त हागो ~

—□—

थे ग्रणगाया गीत

थे ग्रणगाया गीत, रीत सू थानै गावाला
म्हे मोद मनावाला

वाच्योडा नै फर वाचणो
म्हारै मन री ग्रादत कोनी
जूनी मूरत न पूजण री
चचल तन री साबत कोनी

नित सूरज सू नवो जलम रे रास रचावाला
म्हे मोद मनावाला

डाळ डाळ पर रग फळै पण
कळिया म बा सौरम कोना
दिवस तपै सूरज कळभळतो
पण चादी सी रगत कानी

थे ग्रण बिधिया फूल, हेत सूं गलै लगावाला
सिणगार सजावाला

सपना रो व्योपार करयो जद
थे हाटा पर ग्राया कोनी
मेळा रा रेळा मे ढढया
म्हा नै थे बतळाया कोनी

थे ग्रणमिलिया गीत, प्रीत सू थान पावाला
म्हे भाग सरावाला

पछतावो

मन रै महला, प्रीत गाव में
गीत घणा अणगाया रैग्या

घणी अचपळी है जिनगाणी
जोस घणो जोवन नगरी मे
तन परनाळा, तिरै आगणं
नीर घणो रुपल गगरी मे

हिय रै समदर लहरा लेता
अणगिण होठ तिसाया रैग्या

तिरिया-मिरिया सरवर पाणी
भिरमिर आज बरसाती वेळा
कळिया बूक उजागर होता
मदछकियै वास तो चेळा

सगपण मेघ घरा बिच होता
भूण घणा अणजाया रैग्या

कवळी देह कसूमल सपना
अणहूता अणदख्या दीखे
सबद अधूरा भावा भीज्या
हिव नना सू वाचण सीखे

तन रोळा पग सस बथूळा
काम घणा सरमाया रैग्या
गीत घणा अणगाया रैग्या

आव रैं

निजरा करै जुहार आव र
अधरा पर मनवार आव रैं
प्रीत देस रा पावणा
मिठ बोलणा मन भावणा

देख उमरडी घूमर चाल
करै उतावळ कावळ चाल
नींद लजावै, सग ना आवै
जागण रै मिस ओळू आवै

बाधे बादरवाळ आव रैं
खडी सजाया थाळ आव रैं
प्रीत पथ रा पावणा
हस बोलणा मन भावणा

रुत लागै रै नवी नवेली
पवन अणपळी बणै सहेली
फूला फूला मे मद ढुळिया
अग अग मे हिंगळू घुळियो

नाचै मन दे ताळ "आव रैं
गावै रुप घमाळ आव रैं
प्रीत पोळ रा पावणा
रग रोळणा मन भावणा

घुण घुण नै विलमासो

वतळाव तो नासा फड़कै
सबद सुणै तो हिवड़ो धड़कै
चाद उग आघ मुसकाता
सरगम सुध-बुध विसरै गाता

मुस्कल घणो रुसाळ आव रै
टूट सरवर पाळ ---आव रै
प्रीत पाळ रा पावणा
मद मोळणा मन भावणा

—०—

जे तू मिल ज्याय कणा

जे तू मिलज्याय कणा, मनडै री बात करां
रुत री तो रमझोळा, रमल्या साथ तरां
जे तूं मिल ज्याय कणा

गीत तो गावण रा और कई गाया
हिवडै री हाट तणा और कई आया
आवो ब्योपार करां, दो सू दो चार करां
रुत री तो रमझोळा, रमल्या साथ तरां
जे तू मिल ज्याय कणा

कळियां नै काम घणा, महक ढुळावण सू
भवरा बदनाम घणा हस बतळावण सू
आवो वा याद करां, थोडी कुचमाद करां
रुत री तो रमझोळा, रमल्या साथ तरां
जे तू मिल ज्याय कणा

प्रीतम री साख घट्या, कागद ओ कोरो है
मन-भर जी आप नट्या, जीवण तो दोरो है
आवो तन ताप हरां, आवां मन धाप भरां
रुत री तो रमझोळा, रमल्या साथ तरां
जे तू मिल ज्याय कणा

कुण कुण नै बिलमासी
थे तो भाको कोनी, इया ई पिद्यारणा के
थोडी थोडी बात विना, थान म्हे जाणा के
मिलज्यो थे साफ ढळया, दिवलै री वाट वळया
रुन री ता रमझाळा, रमल्या साथ तरा
जे तू मिल ज्याय कणा

थोडा सो सावण है थोडो ई फागण है
थाडो सो सोवण है थोडो ई जागण है
थोडो सो जाग करा, थाडो सो फाग करा
रुन री तो रमझोळा रमल्या साथ तरा
जे तू मिल ज्याय कणा

—★—

समदर पर बादला

मछुआ रा जाळ तो बरजता रैया
समदर पर बादळा बरसता रैया

थाक्या नै थकावण रो
जीम्या नै जिमावण रो
दूनिया रो तो धारो है
धाप्या नै धपावण रो

उमड़–घुमड़ काळडा गरजता रैया
समदर पर बादळा बरसता रैया

सूखै सोन तळाई रै
अमर बेल मुरझाई रै
फळवन्ती फळ हीण हुवै
रसवन्ती कुम्हळाई रै

तिरसाया मोर तो तरसता रैया
समदर पर बादळा बरसता रैया

देखो तो आ हाणी रै
होणी ई अण होणी रै
सूख गई जद धरती तो
खेती क्यारी बोणी रै

बन सू अण बण कर लरजता रया
समदर पर बादळा बरसता रैया

घर री आ फुलवाडो रै
सीच्योडी सी क्यारी रै
धार बिना मण सार नही
उजडै है आ सारी रै
डाळी सू पानडा परसता रया
समदर पर बादळा बरसता रैया

—□—

अडीक

अडीका उणमणा वैठ्या, अदीठा डोळ दरसावो
याद रो आगणो सूनो, ओळ री पोळ पर आवो

अलूणी प्रीत लागै है
अलूणा गीत लागै है
अलूणी हेत री हाटा, सलूणा अब न तरसावो

गोरखड़े वाटडी जोवा
हिवडलो हेत मे पोवा
जोवता ही रहा जागा, भाग नै थे न भरमावो

भटकता आंतरा तोडा
भटकता पथ नै मोडा
जलम नै आप सू जोडा, ठिकाणेसर तो मिलजावो

रूप रो रास भीणो है
सास रो साथ भीणो है
जीणो ही भजीणो है, प्रीत रो सार समझावो

थळिया थाम चौवारा
गळिया गाव रा वाडा
बधावै बारना लेवै, नेह रो मेह बरसावो

मोसमा बोलदा बोल
बादळा भेद हो खोल
बोल्या हो सरं बोला, मबोला भव न उमझायो

छिण छिण छांवळी छेहै
उदासी मणपको तड

पिरायां में घुट तनटो, मनां मे मोद सरसायो
याद रो पाणणो पूनो, पाळ री पोळ परसायो



प्रीत री पोसाल हो थे

थाने तो बुलावा म्हे, म्हाने ना बुलावो थे
बिना ई बुलाया बोलो, आवा तो किया
बतळावा तो किया

गीत री तो ओळी हो थे
रीत री तो रोळी हो थे
प्रीत री हमजोळी हो थे–
रूप री रंगोळी हो थे
रूप री रंगोळी

थाने तो रिझावा म्हे, म्हाने ना रिझावो थे
सुर ने स्यावासी कोनी, गावा तो किया
बतळावा तो किया

कितरी साव भोळी हो थे
मिसरी माय घोळी हो थे
भ्रमर रे चौमासे मे तो–
नीम री निमोळी हो थे
नीम री निमोळी

थाने उळझावा म्हे म्हाने उळझावो थे
सुलझणे मे तो सार नी सुळझावा तो किया
बतळावा तो किया

थुण थुण न विलमासो

मद री मीक घूटी हा थे
सरजीवणी बूटी हा थे
हीरा रा थे हार हो जो–
नगा री अगुठी हो थे

नगा री अगूठी
थाने ना भुलावा म्हे, म्हाने ना भुलावो थे
हिये हृदे हेत मैं, हरखावा तो किया
बतळावा तो किया

रग हो रगसाळ हो थे
निरतण री सी ताळ हो थे
बाजन्ता थे घूघरा हो–
प्रीत तणी पोसाळ हो थे

प्रीत तणी पोसाळ
थारे सग नाचा म्हे ता म्हारे सग नाचो थे
ढम–ढमक ते ढोल न बिसरावा तो किया
बतळावा तो किया

थोडी सी बतळाण करल्या
थोडी सी मुळकाण करल्या
लांबा जीवण जातरा है
थोडी सी सुस्ताण करल्या

थोडा सुस्तायल्या
थाने सग राखा म्हे, म्हाने सग राखो थे
मनडै री मरोड नै समझावा तो किया
बतळावा तो किया

—□—

सौरम रै द्वार

आप सू मिलाला म्हे, सौरम र द्वार
कळिया झुक-झुक झूलै भवरा रै भार
कोयल जद डाळी-डाळी, गीत तो सुणासी र
फूला फली फुलवाडी रगा रग जासी रै
तितली वरण आसी रग रो बौपार ॥

मिमझर सू झर-झर तरवर, हिवडो हुळसासी रै
मन री अमराई रा तो आबा फळ आसी रै
वायरियै सू बहकैला नदिया री धार ॥

यादा री पडछाया घट-घट वध जासी रै
थोडा सा तपसी दिनडा राता सरदासी रै
तारा कहै चाद सू आवा हा लार ॥

पन्तै पन्तै सू यू पळ, छान वतळासी रै
चेहरे चढती चिकणाई, बधती हा जासी र
हर्‌यो हर्‌या जावन ही, जीवण रा सार ॥
कळिया झुक-झुक भन नवरा रै भार ॥

कलियां कोनी रैं

मूंघी रुत रळियावणी पण कळिया कोनी र
तिड जावै जो तावड वै फळिया कोनी रैं

नीलम तारा बीच अेकलो चाद हुवै तो हस बाला
जुगा-जुगा सू बद पडयोडै हिवडै री आगळ खाला
घुळ जावै जो बात सू वे डळिया कोनी र

मोरम मेती फूल हुव तो करल्या गजरै सू मुजरा
नेह नमीली छैल हुवै तो उण रै गाखै सू गुजरा
झाकते झरोखे हाळी गळिया कानी रैं

हेताळ हद बाग हुवै तो बतळावा माळी-माळी
रूप रसीली बेलडिया सग लपटीजा डाळी-डाळी
जगत ठगारा ठूठ है कूपळिया कोनी र

सपन सास री पानी-ढानी जाणै कितरा गाव बसाया
सावण भादु सरवर छळक्या फेरु रया तीर तिसाया
ममदा रा पाणी पीवाळी थळिया कोनी रै

अटकळ-खटकळ खोल चढै कुण मन-मडी पैडी-पडी
साज सजीलो लाज-लजीलो कुण आव नैडो-नैडी
च्यारुमेर त्युहार है रगरळिया कानी रैं

तन तापी री तिरसण सागै भरमीजा गाणी माणी
अूनाळै मैं मरु मोमीरा हिरण फिरै पाणी ताणी
चढतै दिन रो तावडो दिन ढळिया कोनी रै

थारो आणो

थारो नही आणो अकथाणो बणग्यो
काई कोई ओर ही ठिकाणो बणग्यो

साच साच कैवा के खार नही म्हे
सावत हा टूट्योडा तार नही म्हे
आवता अठी नें क्यू आखता हुवो
कुण थारे मीठो सो मखाणो बणग्यो

आप नें अडोका म्हे भीड सू बचा
अेकला अकेला म्हे गवाड सू बचा
मान—अपमान ने समान समझियो—
बावळो सो मन हद स्याणो बणग्यो

घाट—घाट जाणे रा पाठ भूलग्या
अेक रे ही सग रैवा साठ भूलग्या
यादा मे, वाता मे, सपना मे थे—
मतस रो आक आक गाणो बणग्यो

—□—

म्हैं तो जाणू

म्हैं तो जाणू म्हारा मन की
कुण जाणै रे थारा मन की

नदिया समदर सामी जाता
बात करै है खारा मन की
चाद रे आभ मे आना
गत दुरगत है तारा मन की

क्यू काई हद हत तुकावे
मत सनमत है प्यारा मन की
बादळिया मे बिजळी भिळमिळ
गरज बरसै धारा मन की

रूप रास रै गोत गाव मे
हाट सजै बिणजारा मन की
मदसाळा मे फिर झूमता
मतवाळो गत सारा मन की

पिणघट रा घट घट पी लेव
तिरस घणी पणिहारा मन की
गळी-गळी म गाफल डोले
पैठ नहीं रूळियारा मन की

—□—

कुण-कुण नैं बिलमासी

कुण कुण रा मन मार-अठतू कुण कुण नैं बिलमासी
मिछमी रूपाधार तन तो घणा जणा वतळासी।

थारी चाल-ढाल मे चटका
थारी बात-बात मे लटका
जीवन री पणियार हेत री बादळिया बरसासी

छम-छम वाजै पायल थारी
तीखा दीरघ नैण कटारी
सज सोळा सिणगार घणेरी निजरा नैं उळझासी

तू आवै हिवडा हुळसावै
तू जावै जिवडा कुमळावै
जगत करै मनवार नवेली जठै-जठै तू जासी

तू बोलै इमरत रस घोळै
तू झाकै रस राग झकोळै
जासी जिण-जिण द्वार प्रीत री पग थळिया परसासी

जितरी वणो ठणो तू आवे
उतरा भोळा हिया रिझावै
रूप-फळी कचनार, ठगोरो मन भवरा भरमासी

लखपत पाव पुजारा थारा
धनपत मोल कुतारा थारा

घर-घर भोग लगार अटारया मे आवळ उळभासी
लिछमी रूपाधार तन तो घणा जणा बतळासी



तू गोरी, बा सांवली

उमड़-घुमड़ मत चाल मगेजण
[illegible] ढिग छिण छावळी
तू गोरी बा सावळी

ओ फागण सागण ई रसी
ओ सावण मन भावण रसी
रुत आसी जासी फिर आसी-
चांद सूरज री जागण रसी

[illegible] रगही रगरेजण
तू [illegible] ग छावळी
[illegible] बा मावळी

रमतां-रमतां

रमता-रमता रग रा घरमी कर बैठै क्यू राड
आज आदमी मे उगर्‌यो क्यू काटा आळा भाड

हेत-हताई कठै गई वै, गयो कठै अपणेस
सूना-सूना क्यू लागै है, गावा बीच गवाड

लीरा-लीरा रिस्ता-नाता बदळ गयो सा भेस
कुण है कारी देवण हाळो, आवो हेलो पाड

जाण्या-अणजाण्या मिलता ई उमग्याता हिव हेत
अबै वात बा कठै रही रै, जळ-भुन होवै भाड

हाथ-हाथ रो दुसमो होग्यो, प्रीत गयी परदेस
टाग अेक दूज री खीच, दात दुखावै जाड

आपा-धापी घणी मावरी हारी धक्कम पेल
रीत आज री इसी चालरी, खेत खावै है बाड

—★—

सूखा रुख गीला बोल

सूखा-सूखा रूखडा रा गीला-गीला बोल
आ हाटां म ना मिल अर ना बाटा रै तोल

पछी भेर बजावता परभाते री पाळ
सझया लोरी गावता दे दे थपकी ताळ
रितुआ रूप सवारती पूहपडा री माळ
मेघा मोती देवता भर भर ल्याता थाळ

मुधरो वेता बायरो बो घणा बजातो ढोल
सूखा-सूखा रूखडा रा गीला-गीला बोल

किरणा मुजरा देवती ऊगतडै परभात
सझया साज सवारती रमती म्हारा गात
चादा घुर-घुर देखतो तारा करता बात
रातड नेह लुटावती मोनीडा री जात

दिन पलट्या री बायरो वो भूल गयी सै कोल
सूखा-सूखा रूखडा रा गीला-गीला बोल

पळ-पळ पाती गावती रळ मिळ म्हारा गीत
डाळा झूला खावती हस-हस झूली प्रीत
छिण छिण पाती झाडली काळ चकर री रीत
डाळ हिंडोळा टूटग्या राज रैयग्यो चीत

कुण रह जावै थिर सदा आ नही जगत मे रोळ
सूखा-सूखा रूखडा रा गीला-गीला बोल

उनाळे रै तावडै छाया लेती सास
थकियो पथी देवतो सदा जीण री आस
सूखो देखत माभळयो माथै मार मन्नास
फळ पाती म देवतो बो दे आज गडास

फळ देबा रो फळ मिल्यो मिनखा मे आ पोल
सूखा-सूखा रूखडा रा गीला-गीला बोल

—●—

लाव सू लस्कर बध जासी

जात री जाजम नै मत फाड स्यात री बात उघड जासो
पात रै डाळी सू टूटया ऋख पर पछी नी आसी

समदर री लरा ऊंची है
आधिया जोर जणावै है
मोकळा मगर फिर चौफर
गिगण नै घात लगाव है
नाव नै मझधारा मत छाड तीर-तट सूना रह जासी

गवाही इनिहासा री द'र
उगाही कद ताई करसी
धुरजडी हुई भाखरा ढेर
चिणाई अबै किया करसी
गोरबड गाता रहिया गीत, रावळ रावळ रम जासी

भाव मत पाछा इतरो वीर
आगल पथ चूक पड ज्याय
पूज मत इतरा भोम्या भेर
पुजारी ई बण कर रह ज्याय
नीं मे इनरा मत गहळीज, सूरज री जात कजळ जासी

अधारा धार अधारा है
वता भूक्षण भू के होवै
धार ई चोर जमारा है
वता भूक्षण सू के हावै
सावळा बोल्या ई मत जाय, भरम रो भीता ढह जासी

आठ अकट सू आवै गाढ
तीन तेरा ई निवल वणै
सप सू लाख सगाई है
साठ सगळा ई सवळ वणै
तार मत न्यारो न्यारो ताण, लाव सू लस्कर बंध जासी

अूजळ मन मे हुवै उजास
उजाळो घर भाई वण जाय
हाथ सू हाथी थकै पचास
सबळ रा साथी जग वण जाय
डील नै राळो मती वणाय, कपट रा सरवर सुस जासी

—□—

जद कुण गीत लिखैला

जद कुण गीत लिखैला, जद कुण गीत लिखला
सुर री साख अडाणी मेल्या, किण विध साज मजैला

धमाचौकडी मे उळझ्योडा
मिनख मिनख न भूल गया
रस रामत रा रास गया सै
महक गई अर फूल गया

पणघट जाता घट भरल्याता, कवळा लौग डरैला
जद कुण गीत लिखैला, जद कुण गीत लिखैला

कितरी ऊडी अबखाई है
कितरा किरियावर पाळ है
डगर सा दरद उघाडै है
समदर सा घाव रुखाळै है

धरती सू ले अबर ताई, वदरगी रग रगैला
जद कुण गीत लिखला, जद कुण गीत लिखला

हेत हताई मोत मिताई
प्रोन पुराणी काणी है
भायप री पहचाण गई
अब रंगा खीचा ताणी हे

बिम रा बीज, बीज रासे तो बिम री बेल बधला
जद कुण गीत लिखैला, जद कुण गीत लिखला

सावण झूल फागण फूलै
ना घूघर झणकार हुवै
मेंदी मुळकै हिंगळू हरखै
ना सोरठ सिणगार हुवै

चग बजाता, रग जमाता, निरला मिनख मिलैला
जद कुण गीत रचला, जद कुण गीत रचला



ग्रंधारौ

अघारा री जूनी जागीर चानणी आग्या पटक है
रात मे अबलख रो असवार दिवस भर माथा पटक है

मावज मे खीची दो भीत सुरज नै झाकण नी देव
'वाड" र जाळ मे उळझयो निजर नै नाखण नी देवै

हुकलियो झिमरिया भरदे हनाया उदरिया आवै
माकडो खडी करै अरदास मफला काचरडो गाव

सी'ल भू सगपण करियो है कूट सरणाटो लटकै है
रात मे अवलख रो असवार दिवस भर माथा पटक है

काजळी नणा कामणगार साझ सैना मे समझावै
उछलती आगण तारा देख निजारा कर नेडो आवै

चाद सू घणा जलम रा वैर मुकदमो पीढया सू चाल
घरा तो बावण नै दोनो निसरडो हासल नी घाल

विघाडी आठै तक देवै मुघाडै सासा घटक है
रात मे अउलख रो असवार दिवस भर माथो पटक है

गढा री जूनी बुरजा वीच मसमलो सपना वतळावै
मे'ल र वद दरूज आय छेड चमचेडा विडदावै

क मुजरा कर बूढलो भस रुपाली निजरा बरसावै
पातळी कडिया चिमनी देख दिसावा झपटण न ग्रावै

ग्रमावस मोटौडा त्यूहार छेलियो घर-घर भटकै है
रात मे ग्रवलख रो ग्रसवार दिवस भर माथा पटकै है

दायज ग्राई जाजम ढाळ, दासिया बाजोटा ढाळै
थाळ घर नै ग्रोछाड उधाड पुराणी लीका नै पाळै

सावतो प्याला री मनवार सरबरा सखरी कर जाणै
ग्रागळा ग्रुल नही जद ताण मुछाळा मौजाई माणै

झाक जद लेवै भाण सुराख हडभड भाग भटक है
रात मे ग्रवलख रा ग्रसवार दिवस भर माथो पटकै है



रोसनी रैं बारणैं

रात बीतगी ज भोर आयगी आ जाणके--

किरण किरण कारण झाकता रह्या म्हे
रोसनी रैं बारणैं झाकता रह्या म्हे

आधळा अंधारा सूं टळता'र टाळता
राज री सुराज री साख नैं सभाळता
बाघ बानरवाळ द्वार-द्वार पैं अडीकता

आगणा मे माडणा माडता रह्या म्हे
रोसनी रैं बारणैं झाकता रह्या म्हे

तिरस मनड नैं तो बादळ री आस दी
थकियोड पगा न सूरज री साख दी
मानली क मजला पूग र्या, पहुच र्या

कदम-कदम फासला नापता रह्या म्हे
पड पड पावडा नापता रह्या म्हे

जीत री पिछाण मे रीझता रिझावता
खुसिया रा घूघरा सुणता सुणावता
फला ही फूला रा सपना सजाइया र

जागिया तो गावता'र नाचता रह्या म्हे
किरण किरण कारणैं झाकता रह्या म्हे

दौड़ दड़बड़ा

मन रा अवलख घाड, तू दौड दड़बड़ा
खुल्ला पटिया खाड, तू दौड दड़बड़ा
दड़बड़ा दौड दड़बड़ा

पीलै पोखर पाळ, मिल जिनरो ई पाणी
तरसी कितरी ताळ, अर थाडी जिनगाणी
पुटठा रै परवाण, नाप ले नाप अलेखा
पोडा पोड उघाड, थरा गाडो हमाणी
वधी नगामा तोड, तू दौड दड़बड़ा
दड़बड़ा दौड दड़बड़ा

खुद री खाल तपाय, 'क खुद रा खेत मिलला
जुध रो भाव जताय, 'क हेत समेत मिलला
नासा सास हिरोळ, जीत रा गीत उगोज-
हाफळ ना डफळोज, क कई कुमेत मिलला
मचरी हाडा होड, तू दौड दड़बड़ा
दड़बड़ा दौड दड़बड़ा

आखड़जे मत भूल हात तो मजला आ'गी
भरमा मे मत भूल सोवता जग तू जागी
ऊंचो भाखर भोम पथ मे खाड घणेरा

मूळ मिल च फूल, जीव लग जाज भागी
घर वू डिया उाड नू दौड दडवडा
दडवडा दौड दडवडा

पावन रो झणकार जात रा ढाल मुणला
मदमानो मनवार, प्रीत रा काल सुणना
जे जासो तू जात, जगत री मवली वाजी–
घर–घर वानरवाळ, गान रा वान सुर्णला
मन न भागे जाड, तू दौड दडवडा
दडवड़ा दौड दडवडा

जुग–जुग रा जूझार सूरज र माथ तपीज
गज माती गळहार मान रा थान थपीज
रागो तू करडाण, समझ रै सगळा निवला
मजरा री पहचाण, मौत सू रास रमीजे
मारग मजला माड तू दौड दडवडा
दडवडा दौड दडवडा

—□—

गीत

म्हे तो प्रीत वधाई अणहद, पण थे घणी उदासी दी
म्हे तो समदर कर्‌या निछावर, पण थे नदियां प्यासी दी

पथ-पथ मे नैण बिछाया, नैणा करी उडीक घणी
आवणिया फैरू नी आया, दरस दुसमणो करी घणी
थारं खातर तन-मन दाझ्या, हिवडै हेत तलासी दी ।

आ नै पूछा, वा नै पूछा, पूछ-पूछ थाक्या जावा
अतो पतो नी मिले कठैई, ढू ढ-ढू ढ झाक्या जावा
दोरो-दोरो लगै जमारो, था दोधार चला सी दी ।

वादो करणो फर न आणो, आ तो वात अजब री है
भूल-भूल के याद करा म्हे, म्हारै गरज गजब री है
इमरत साटै, जहर पिलाक, थे तो पीड जगासी दी ।

सुख बिसरायो, चैन गमायो, नैणा नीद नही आवै
हिवडै सूळ उठ आ जाण्या, कठै-कठै आवै-जावै
म्हारै खातर मू घा हुयग्या, औरा हाट लुटा सी दी ।

म्हां समझाया समझ नी आव, वां समझाया समझ करां
अपणी हित अणहित नी जाणो, थे जाणा भी गजब करां
म्हे तो थां हित बाग लगाया पण थे सास गमा सो दी।

खिलता दिन री रूप रास है, इण रा मद गुमज करां
था नां तार-तार हाणी है, वण ठण, कई वधेज करां

म्हे तो थारे सुरमा सार्‍यो, पण थे निजर घुमा सी दी।
म्हे तो प्रीत लुटाई अणहद, पण थे घणी उदासी दी।

—o—

मूल कठै अर डाल कठै

जितरी जडा जमी मे होसी उतरी साख बधीजैला
जितरी रूई कतेरण राखै उतरी सूत कतीजैला

जिण पिणघट पर प्रीत न पावै उण घट पाणी पीणो के
मन रा माद मना मे मुरझै, इसो जमारो जीणा के
बतळाया सू बोलै कोनी काम पड्या क्यारी काट-
जा रै मन री मगजी फाटी बीनै पाछी सीणा के

जितरा पाट पडोसी रसी उतरा मया पिसीजैला
जितरी रूई कतेरण राखै उतरो सूत कतीजैला

आसमान पर खेत फळै नी, अ तारा थारा कोनी
समदर छोळा हेत बधानी, अै धारा थारा कोनी
ओस बूंद कद माळा पोवै सपना किण रा साच हुया-
छाया रा चितराम बावळा उणियारा थारा कोनी

जितरी नजर भवीजै भरमै, उतरो हियो तपीजला
जितरी जडा जमी मे होसी उतरी साख वधीजैला

इण जग रो है उलटो धारो, बोल कठै अर चाल कठै
गठजोड री गाठा उळझै कोल कठ अर ताल कठै
काया तो कागद रो माया जो लिखणो सो लिख देरै-
मन रै वडलै साख हजारू मूळ कठै अर डाळ कठै

जितरी तिरस बुझाणो चासी, उतरी तिरस बधीजैला
जितगी रूई कतेरण राखै उतरो सूत कतीजैला

पाणी धारा नाव डुबोदे, पण नोका रो जीवण पाणी
उड उड आवै घणा पतगा प्रीत जोत मे बळवा ताणी
मरण माच नै सा जग जाणै पण जीवण हित जुध लडै
प्रीत पागळी लूलो गूगो, पण इण सूं है खोचा ताणी

जितरा सबद भाव मे भीजै उतरा गीत लिखी जैला
जितरो जडा जमी मे होसी उतरी साख वधीजैला

तन तो तोला मासा रैं

अमर सदा वाणी रो जोवन, जीवण समझ तमासा र
बोझ घणो मन रो भारी, ओ तन तो तोळा मासा रैं

बीती सू परतीती राख, आगत आवभगत बिसरैं
मूढ कळपना गा तिरसकू, सदा अधर-वम म बिचरै
धरती पर आम्वड वाळा क्यू, बात करैं ऊँची-ऊँची
सपना री मगत सोविणया, किणरै पथ उजास करै

उळझी घणी अकल ही ज्यारो, किस बिध सुळझै भाषा रै
बोझ घणो मन रो भारी, ओ तन तो तोळा मासा रै

सूरज इतरो ना सिलगावै, पण तारा उतपात कर
रण अमावस रैवै कुमनी, पण पूनम ई घात करै
रग फूल गे रमै न रग-रग, सौरम राज करै मनड
दैव वासना गा भूखा पण, मिनख भोग री आस करै

आसा अथक बधावे आगे, पकडे पाव निरासा र
बोझ घणो मन रो भारी ओ तन तो तोळा मासा रै

बाता मे बिनमीजै, ज्यारै तन मे ताप रयो कानी
सैना मे समझावे, ज्यारै हिवडै हाथ रयो कोनी

निजरा घणो तीसळे वारो, नैणा क्दै न रास रयो–
मजळा मू घी लागै, ज्यारै पगल्या थार रयो कोनी

खेनणिया जीतै जग वाजी, कद न जीते पासा रै
बोझ घणो मन रो भारी, श्रो तन ता तोळा मऽमा र

श्रागळ ढकी, जिका रै मन रा, पाप पडत खुलता देख्या
श्रोटी श्राग राख रै श्रोटै, बारा तन बळता देख्या
जितरा कसणा काठा बाध्या, उतरी लाज उघड श्राई–
वाधी पाळ जिका धाग पर बारा बध ढुळता देख्या

मिनख सदा स्याणप मे जीवै, पण कुचमादी सासा रै
बोझ घणो मन रा भारी, श्रो तन ता तोळा मासा रै

—)—

रुत नैं रुजगार मिलैला

थोडा सा काटा छाटो रै
फूला रो मेटा फाटो र
सौरभ नै घर-घर बाटो रै
सुर नै सिणगार मिलैला
रत न रजगार मिलैला

थे राग रागणी टेरो रै
गीता री गमक उगेरो रै
भावा रा बीज बिखेरो रै
धरती नैं धार मिलैला
रुत न रुजगार मिलैला

औ आज-आज ई साचो रै
वहतै वायरियै बाचो रै
मदवा मद छकिया नाचो रै
पग नै झणकार मिलला
रुत नै रुजगार मिलैला

पी जावा वै पणिहारा है
दिख जावो व उणियारा है
लुट जावा वै विणजारा है
विकिया बोपार मिलला
रुन नें रुजगार निलैला

भवरा नै मद भरमावा र
कळिया ा गळै लगावा रं
कायल सू हस वतळावा रं
गळिया गुलजार मिलला
रुत नै रुजगार मिलैला

तारा री मैंफन थारी है
थारी ई मा फुलवारी ह
धरती ता ग्रखन क्वारी ह
मन न मनवार मिलेला
रुत न रजगार मिलला

—□—

प्रीत रो मद

लीरा-लीरा है जमारो, सीया तो करो
थोडो-थोडो प्रीत रा मद, पीया तो करो

नैणा री भाषा मे जग भर री बाता है
रग वर री बाना है मन भर री बाता है
ग्रण बाली-वाली मे वाता कीया तो करा

लीरा-लीरा है जमारो

हिवडै र हेताळ् री ग्रडीक करणी है
हेत रो हताई न वधीक करणी है
जागती ग्राग्या मे जोबन, जीया तो करो

लीरा-लीरा है जमारो

सास री कमाई तो घटती घट जाणी है
रूप री लुणाई ग्रा लुटती लुट जाणी है
मैफन है मनवार प्यालो लीया तो करो

लीरा-लीरा है जमारो

झाकतड झरोखा जाळी, झाको तो सरी
नेह सूं नागाडो निजरा नाखो तो सरी
गाफल गुलजार गळिया गोया ता करो
लोरा-लीरा है जमारो

अब आवै अब आवै जै आ वैम तो पाळो
नित आव नितरा हो वै वाटा ता न्हाळो
पीपली पसवाडै झाला, दीया ता करो
लोरा-लीरा है जमारो

—□—

आबो फलग्यौ ऐ

आवो फळग्यो ऐ कोयलडो समझ गई आ वात
चिडिया चहक चहक चरचावै फैल गई आ बात

बदळ गया रंग रूप बदळगी भासा ई सगलो
पथ पथ पगडंडो सारै कह देवै आ बात
आबो फळग्या ऐ

सौरम सीना ताण नीकळी गाफल सी डोल
डाळी-डाळी ऐ सखो सहेल्या बतळावै आ वात
आबो फळग्यो ऐ

कितरी इतरी इतरी तितली चौफूटा गरणावै
डोढ डोढ मे डोड कागला दुलडावै आ बात
आबो फळग्यो ऐ

माळी रै मनमोद बाग री साख सातरी है
छानै छानै कनबतिया मे कुण कैवै आ बात
आबो फळग्यो ऐ

एणै सूवटो मैना वाचै पाती प्रीत लिखो
बायरियो वळता कळभळतो कह देवै आ वात
आबो फळग्यो ऐ कोयलडी समझ गई आ वात

-o-

"क्यू"

थारै सू बात करा म्है खिलत गुलाब री
आगणै री चानणी सू मिलत जवाब री

नदिया री धारा मे वीणा सी बाज क्यू
सागर री लहरा स नचती सी भाजै क्यू
हसतो सो फागणियो गातो सा सावण क्यू –
बिजळी री बाथा मे बादळिया गाज क्यू

थार सू बात करा म्है खुलती किताब री
आगणै री चानणी सू मिलतै जवाब री

काळ अधियार मे, निजरा मे आवै क्यू
कोसा री दूरी नैं, नेड सी लाव क्यू
सूनै मे साख भर, हिवडै हिमळास भरै-
खाली सा जीवण मे, खुसिया भर जावै क्यू

थार सू बात करा म्है मन रै हिसाब री
आगणै री चानणी सू मिलतै जवाब री

कुण कुण नै बिलमासी

सगळी तसवीरा रा एकसार चहरा क्यू
पथ तो पचासा है एक साथ डेरा क्यू
मौसम री मैंदी न बार-बार बाटणिया-
रूप री तिजोरी प पाप रा ही पहरा क्यू

थारै सू बात करा म्है तन रै रिझाव री
आगणै री चानणी सू मिलतै जवाब री

—□—

आथ मती

उगिया पैलो आथ मती, जाग्या पैलो सोवै क्यू ?
चाल्या पैलो थमै मनो, ढूढया पैली खावै क्यू ?
जीवरा जीणो है इमरत पीणो है

जीवण लाबो पथ उघारै पगा कदे नी पूग सक
जीवण जबरो जुध, भटकती सासा कदे न जूझ सकै
मजला मूघो, मरद, घणा ई खाडा खोचर माडा रै-
जीवण तिरतो फूल, उफणती बाढा कद न डूब सकै
साध्या पैलो फोड मतो, राध्या पलो ढोळै क्यू ?
बधिया पैली तोड मतो, नितर्‌या पैली खोळै क्यू ?
धीरज धीणो है, कातर सोणो है

थाक्या थाक दबावे दाव भाग कदे न बढण दे
भाग्या, भाग मथी सुणता हो दुसमी कदे न चढणै दे
हारयोडा, ठार्‌योडै लाही वामू कुणसा प्रीत करै-
जाग्या, जाग जाणता ई जग जीत गीतडा पढण दे
सुळझ्या पैलो उळझ मती, तपिया पलो पूजे क्यू ?
उघड्या पैला ढकै मती, ग्विलिया पैली मुरझै क्यू ?
समद विमाणो है, रतन रमीणा है

रोहो रो वण फूल मुरझणो आछो नही कहीजै लो
घावा रै तिरसूळ मुरचणो नितरा नहीं सहीजै लो
सायत रा सो अरथ हुवो पण अेक अरथ तो साचो है–
ससतर रै सामेळ जाता पाछो नही रहीजणो
जोडया पैली मोड मती, हसिया पैली रोवै क्यू ?
फळिया पैली फोड मती, काटया पैली बोवै क्यू ?
बगत नगीनो है, रगत रगीनो है

करतब काठो रिया, जमारो झुकसी हद सनमान करै
काटा सू पगथळिया बीधे, जद मारग अभिमान करै
सोया सू तो साख घट पण जाग्या जगमग जलम हुवै–
जस रा दिवला च्यारू कूटा पीढ्या लग गुणगान करै
उफण्या पैलो ठार मती, जीत्या पैली हारै क्यू ?
उरस्या पैली सा'र मती, जलम्या पैली मारै क्यू ?
समर सलूणो है, दरद अलूणो है

हैं खीचडी खजूरा पैं

तू भूलियो मजूरा नै, अर छोड्दी हजूरा प ।
आतो पकतो सी पक्सी, है खीचडी खजूरा पैं ।।

बा धार अटकरी है, क्यू राह भटकरी है
सगळाई जाण है- किण आख खटकरी है ।
तू ताफड तोड करैं— फेरूई भूख मरैं,
तू निबळ अबोलो है अब काई जोर करैं ।
मोवा नै कुण पूछरे, है जद निजर कगूरा प ।।

अब कुण सू बात करा, कुण कुण नै साथ करा
मैं अपणी ही सोच- कुण न समळात करा ।
थारो तू थारो है म्हारो म्हू म्हारो है,
है पेट घणो पापी, सगळ ओ धारो है ।
ना ही बोज बण कोई टपकै लाळ अगूरा पैं ।।

रतना री डाबी दी, घर थाळ रकाबी दी,
तू कितरो भोळो है—चोरा न चाबी दी ।
लूटण नै डेरा है, पाचू पचसेरा है,
अब शाह नही कोई, सैं अेरा गेरा है ।
तू बागा री रखवाळो, क्यू छाड दी लगूरा प ।।



म्है जाणा

म्हानै कितरो पीणी है
म्हे जाणा

इण मे कितरो जहर घुळयो, अर
कितरो पीणी है
म्हे जाणा

म्हारै मन री तिरस अनूठी
पीता पाण बधै
वाता—वाता मे कह देवै
पाजे कदै कदै

मन री मगजी कितरी फाटी
कितरो सीणो है
म्हे जाणा

मनवारा स मन री धापै
पुरस्या ई सरसी

लाज मरया तो मर मर जास्यो
कुण काई करसी

कुण कुण नै बिलमासो

ओ जलम जुलम करतो ही रहसी
चादर झीणी है
म्हे जाणा

थे नटस्यो तो घटसो थारी
म्हे तो थारा हा

थे नद हो तळ ताळ तळया
म्हे मझधारा हां

आ बदरंगी रंग, रंग जाणै
आ रंग भीणो है
म्हे जाणा

—□—

लुभायां लेगी रैं

काई–काई कवती काई कैगी रैं
लाल–लाल लाली तो लुभाया लेगी रैं

डाळ–डाळ आवै जावै चीडी री सुणो
उडयो–उड्यो आवै वीरै भीडी री सुणो
उड–उड कर उडतोडी उडाया लेगी रैं

बाग–बाग री बहारा बण बावळो फिरै
हेर–हेरतो हिरण्या, नैं उतावळी फिरै
कूद–कूद कूदती कुदाया लेगी रैं

मैं ना–मैं ना कैया मैं ही नै बुलावती
फरर फर फराट सू भाळा नै भुळावती
तोता–तोता बोल 'र बुलाया लेगी रैं

टरर–टरर–टरर कर तीरा पै तर
डरर–डरर–डरर कह जराक नी डरै
तिर–तिर तिरतो तिराया लेगी रैं



माणस

माणस ! तू पारस साचोडो, जीवण नै सोना सूं भरलै
अेक नदी पोखर सरवर के, तू तो सात समदर तर लै

थारो हसणो, मन हरखाई
थारो गाणो गरव गमाई
तू खुसिया रो बडो खजानो–
थारै हाथा घणी कमाई

जीत सदा थारी अगवाणी, मातर पातर समतर कर लै

तू सौरभ री साख वधाई
रगां री मैंफल महकाई
थारी सासा सरगम रा सुर–
पर सेवा, परसेव वहाई

दूजां रै हित आपो मेटो, इतनी बात हिया मे धर लै

तू हाभळजे हेत हताई
साची साख सनेह सगाई
प्रीत पाळ परथक प्राणी सूं–
सागै सरसो सत सचळाई

गुण मूं गरज, गरज गुणी जन सूं गिण गिण ओगण सारा चरलै

काटा सू कलिया चुण ल्याई
भाटा सू माणक विण ल्याई
जहर भरी जगती रै खातर–
इमग्त रा सो घट भर ल्याई

सुख रा साज सजावण साथी, जण जण री तू सकट हर लै
माणस ! तू पारस साचाडो, जीवण ने सोना सू भर लै



आफत में आदमी

जमै ना जमी जग, नापतो फिरै
आफत मे आदमी हापतो फिरै

ताकत तोली घणी, मैणत मोली घणी
ओ धरती रो धणी, कापतो फिरै

मिलै ना मजूर र होयगा हजूर सै
अेकलो खजूर, छाव भापतो फिरै

पूछलै गरीब नै देखलै अमीर न
गमियोडै धीर नै, भापतो फिर

भूल तेग धार न, वीरता र वार नै
धूळ धो धार पग, चापतो फिरै

छोड प्रीत रीत नै, गीत नै सगीत नै
रहियो न मीत निजर टापतो फिर

—□—

बाचा दोय घडी

जहर भरी सारी जगती मे, बरसीजै जहर झडी
कोई इमरत प्या देवै तो, म्हे पील्या दोय घडी।

काटा ही काटा री काकड, काटा री ही वसती
महकती फूल मिल जावै तो, म्हे देखा दोय घडी।

थासू वासू बात करै वै, म्हासू क्यू न करै
वै अरा मोळै ही बोलै ता, म्हे मुळका दोय घडी।

नटणो ही नटणो सै जाण, नटणो ही सै समझ
कोई हा ही भर लेवै तो, म्हें हरखा दोय घडी।

जीवरा जवरो जुध जाणीयें, तावडियो तपै घणो
ठडी छावळी मिल जावे तो म्हे बैठा दोय घडी।

पोथ्या की पोथ्या लिख भेजै, परा कोई नही पढै
वै आळी ही लिख भेजै तो म्हे बाचा दोय घडी।

—❖—

हार मती

हार मती र मरद मानवा, धरा धाम रा जिनगाणी।
मोटा आव दगाद ट मा, गाव गावणी जिनगाणी।

प्यारस न न गुण्या में गाम धाव पवन थठ मती।
मारग धाणा, गजला धापी, धाप मेर थट मती॥
जाग जवाना रग मरगा ही, मता, हापती जिनगाणी।

मातर मातर जाए जाट नू, सौंग मोरणा दरी जरी।
पेट पट पावन्दा परता, जीत हुवसी रारा मरी।
समझ समझणा थागी है ने मरम भापती जिनगाणी।

धान्यडिया मा फर गमझगा, समळ गमळ माग बधसी।
पुडन रा मतवार हुव थ चडै पड पड पड पडसी।
धक्रिया तो धिर धार हुवैला, धाप, धापती जिनगाणी।

पछतावो मत कर गफलत री, सुरज उगै जागै जद ही
बीती बीती समझ बीतगी, आसी वा आसी अब ही
घणो पडो है, घणी नडी है, नाच नाचती जिनगाणी ।

तू किणसू कमती कोनी रै, तू सा'सू वधतो वधतो
तू किण सू पाछै कोनी रै तू सा'सू आगै बढतो

हीण भाव री भूत भगादे, जीत, जीवती जिनगाणी
दौडी जावै दडा छूट आ, नाप नापती जिनगाणी ।

—□—

ऊ ट डूगरा नीचैं श्राया

माणस करी गुमेज, मतो तू पगा-पगा पर है श्रवखाया ।
भरम भाव री भेद खुलला, ऊट डूगरा नीच श्राया ।।

मत इतरी इतराव मनड म्हानैं थडगो वाडा बडगी ।
श्रक्ल श्रलेख सरीरा उपज, कहदे क्सि क्विाडा जडगी ।।
श्रा ता श्रापा हो जाणा हा, घाळा री ही काळो छाया ।

श्राखडता नै ज श्रखतासो, तो तू किण विध सभळ सकला ।।
वा रै पाळा खोदे खाई, थार निस्च कूप खुदला ।
तू कद सीतळ साळा सासी वान तपतै ताल तपाया ।।

श्रजब गजब है लाग भायला, श्रेक श्रेक सू है इदकाई ।
खुद नै खुदा वणा मत लीजे, नीतर होसी जगत हसाई ।
थारै गीता जद रस श्रासी, सा'र साग सुर मे गाया ।।

चालैं वानै मजला मिलसी, विन चाल्या कद पथ कटै ।।
श्रास पिया क्द तिरस मिटी र, सबदा सू कद भूख मिटै ।
दूध पिया ही पेट धापसी, किया धापसी गाय गिणाया ?

क्यूं दोस कबीरा पै

राणोजी रूसै तो कर रोस न मीरा पै ।
जग उलटै बास चढ़े, क्यू दोस कबीरा पै ।

अब साच सरमगी है, झूट दरबारां म
लूटणिया लूट करै क्यू दण्ड फकीरा पै ।

सोनै रा सपना है, माटी री हांडी मे
बेला रा बीज नही, मन मर मतीरा पै ।

ठाला भूला टसक, जाजम पर जमरया है
मझधारा जूझणिया, डूबै है तीरा पै ।

सुख रै सामैळ तो जाणो ई तै चावै
दुख रा दरदीला सुर, कुण सुणै मजीरा प ।

जग उडै अकासा मे, मन मरजी भागै ह
क्यु लोग इस्याई है, वै चल लकीरा पै

काजळ ई काजळ मे, धोळा नै कुण धारै
काचा ही खावणिया, क्यू मेकै खीरा पै ।

—✱—

बात

थे जाणो अर जाणा म्हे ही, थार म्हारै कितरी बात
कुण कुण नै दया साफ सफाई, जितरा मूंडा उतरी बात

दो हिवडा री हेत हयाई, जणा जणां री चढै जबान
सळ नै तो सळ ही रैवण दयो, अब तो सारै बिखरी बात।

प्रीत रीत पथ मीत देखता और देखता हस बतलाण
लोगा रै बधगो अवखाई, म्हे तो जाणा इतरी बात।

थारै खातर तन मन वारा, धन सम्पत सू दे सनमान
पण थारी ना समझी सू ही बीच बजारा बिकरी बात।

गळी गळी मे वेळ कुवेळा, आणो जाणो है निरसार
समझा हा पण समझा कोनी, आ तो म्हारै नितरी बात।

भोळा री भोळप तो देखो, भरी भीड मे बोला बोल
च्यार दिना री जिनगाणी मे, लुक छिप करस्या कितरी बात।

मन मे के मजमून देह रै दरपण मे आज्यावै सार
ओलै छानै बात करा अर चोड धाडै दिखरी बात।

थारी ना सू हुवै उदासी, थारी हा, सू हरख घणो
थारै निरखण री निजरा सू नखरा कर कर निखरी बात।

—❀—

सोरठा

मालण ल्यायी फूल, ग्रोडी भर्‌या बजार मे
भोळा करदी भूल, फूला रैं बदळै बिक्या
मालण मत कर मोल, फुलडा भरदे खोळ मे
सोने-चादी तोल, जोवण कोकर थामसो
मालण थारा फूल लाग कितरा फूटरा
तोडचा कोनी सूळ, नैणा मे चुभसी घणा
मालण डाळ मरोड, हिवडै मे हरखो घणो
फूलडा-फुलडा तोड, छोडी जोबन छावळी
मालण सींच्यो बीज, रुत ग्राई बेला रगी
बरसाळै मे भोज, भूल फूल भोला कर
मालण मत कर मोल, मोको है बिन मोल दे
समो गमावै तोल, सूक्या बिकै न फूलडा
मालण थारै बाग, ग्रावण री मनस्या घणी
फूला छायो फाग, जोबन छायो भुरमटा

सोरठा

बाळपणँ रा साथ, देसैं पण दहलै नहीं
जोबनिया रा हाथ, हाथ उठावै अणगिण्या

बाळपणै री बात, रमता थकै न रेत म
जोबन खेलै घात, रात्यू चादो ताप दे

बाळपण री बात, मीठी लागै मोकळी
जोबन ग्रैडी जात, बाता सू विलमै नहीं

बाळपण रा बोल, लाखा रै बिच बोल दे
जोबणिया रा कोल, छानै-छान सी करै

बाळपणे रा मोत, मिलै न हेर्‌या मोकळा
जोबणिया री पीत, पळ-पळ मे पाछी पडै

बाळपणे मे खेल, मुद मुद निरख मावडी
जोबन करदे जेळ ताळा द माडी हुव

—※—

बात कर बादल सूं

सावण री सौगात, बात कर बादळ सूं
बरसैला बरसात, बात कर बादळ सूं ।

अळगा है अळगाव मीत मन मानीता
सो बाता री बात, बात कर बादळ सूं ।

जे तन मन मे आग, अणूती भळ काढै
बुझ सी अबकी स्यात, बात कर बादळ सूं ।

कामणिया मन कोड, पीव पण परदेसा
होमी सगळो साथ, बात कर बादळ सूं ।

हीडा री हमजोळ, तीज री तीजणिया
लहर्‌या मे लहरात, बात कर बादळ सूं ।

बिजळी तणो बणाव, नाच री नाचणिया
मन ही मन मुस्कात, बात कर बादळ सूं ।

मिलण रो मनवार, आर वै थयू करसो
आवेला अधरात, बात कर बादळ सूं ।

—□—

थे आया

थे आया मन मोसम बदळै,
तन धारै तरुणाई
पो 'र घडी मे, घडी पला मे
समै प्रीत सरणाई
सास सास सूरापण समळै,
प्राण री गत न्यारी
काना मे रस राग घुळीजै
नैणा मे छिव थारी
पग मे निरतण घूम मचावै,
रगसाळा जग सारो
हाथा मे मेंदी मडजावै,
होया सागो थारो
धरती उठ असमान नापले,
चादो बोलै म्हासूं
समदर कोड किलोळा थिरकै
बात करां जद थासू
जीवण साचो जीवण लागै
हरखा हेत हताया
सो बाता री अेक बात है
सै किरतब थे आया

मुक्तक

दिवला थारी जोत सफळ, जद आय पतंगो बळ जावै
फुलडा थारी सौरम रै मिस, आय भवरडो बध जावै
कोयल थारा गीत फळै जद, वागा री कूपळ मुळकै
चाक्षा थारो रूप सफळ चितराम बटाउ बण जावै

चादो आवै म्हारै आगण आकै आधी रात का
झिल मिल तारा नीद उडावै, भरम भरै मौ भात का
रळमिल नाचै हिरण्या फिरत्या, मोद करै नभ आगणै
मन री बात मना मे राखै जाय छुपै परभात का

सरवर छळकै निरमळ पाणी, आवै सायण नाचती
पगडडी पर लिख्या पीव रा, प्रीत गीतडा बाचती
बिन प्याला मतवाळी होवै, लहर-लहरसू बोलती
तू सरवरियै तिरसी, रैगी, रैगी नीर उछाळती

काळी धोळी वादळी तू बिन बरस्या मत जावै अे
सूखै खेता बीज फळ ना मतना धरण लुकावै अे
घणै हेत री घणी तपन सू नैणा तातो पाणी अे
कीकर सीचू इण पाणी सू प्रीत बीज बळ जावै अे

आँ' नै देखो वा' न देखो
छान मानै सा' न देखा
अेक वात पण माना म्हारी–
बे मतलब ही का 'न देखा

आ' सू मिलिया, वा' सू मिलिया
साच माच मे, था सू मिलिया
वो मिलणो वे मिलणो व्हैगो–
जद जद ही म्ह म्हासू मिलिया

जै मिल ज्याता आप अठै, कितरी वाता कर लेता
बे मतलब ही हस लेता हस हस डुसक्या भर लेता
जुग बरसा री के कहणी, अो समै पलट जातो छिण मे
सो सो जीवण जी लेता, सो सो जीवण मर लेता



राजस्थानी नार हू

जुगा–जुगा सू इण धरती र, जण–जण री रखवाळ करू म्हे
दुख नै सुख मे बदळ सवारू, पळ–पळ री प्रतपाळ करू म्हैं

सिरजन हू, सिणगार हू
निरतण हू, झणकार हू
मीरा री इकतारो हू
जोहर रो अगारो हू

पदमण करमवती रै सागै, सगपण मरण त्युहार हूं

राजस्थानी नार हू
राजस्थानी नार हू

वीणा पाणी री वाणी वण, जग–जग मे बिस्तार करू म्हैं
लिछमी रूप धार धरती पर, अन–धन सू भडार भरू म्हे

दुर्गा रो अवतार हू
ताकत रो तळवार हू
करमा रो प्रणप्यारो हू
नागण रो फणकारा हू

मैंदी और मसाण पिछाणू, मौन तणी मनवार हू

राजस्थानी नार हू
राजस्थानी नार हू

हर बूटे री कळी-फळी हू हर धारै री क्यारी हू म्हैं
खेता सींव सभाळी रासू, हरस भरी हरियाळी हू म्हैं

करसण री पतवार हू
ग्रिस्ती हू घरबार हू
धरती री हलकारो हू
जीवण रो पतियारा हू

फळवती फूला बेल वणी म्हैं, मीठी गटक जवार हू
राजस्थानी नार हू
राजस्थानी नार हू

भजना रा करताळ मजीरा, काती पुस्कर पडी हू म्है
सावण रा भूला, राखी हू, फागण मूमल मंडी हू म्है

भगती री गणगौर हू
सगती री सिरमोर हू
मिनखा जूण जमारो हू
बाती, दीप उजाळो हू

अधारै री धाक मिटावण, भळवळती हुकार हू
राजस्थानी नार हू
राजस्थानी नार हू

—□—

रावण कद मरसी

साल्यू साल मरै रावण पण साल्यू साल जनम लेले
राम बाण नी काम करै रै, भीतर घात भरम ले ले ।।

देश विदेशी तोपा सू तो इण रो शीस नहीं झडमी
गोळा तो थे बोळा ल्याया, बासू पार नहो पडमी
दस माथा को इक माथाळो जाणो हो थे के थग ले ।।

इण रा चेला चाटी म्हाटा जगा जगा पर छारया है
काळ पडो दुकाळ पडो पण औ तो मोज उडार्‌या है
रिस्वत रा राकस ही राकस जगा जगा पर पग मेलै ।।

दूध दही घी खाड मसाला, कपडा मिरच दवा दारु
घणी मिलावट हो री है रै, जहर शुद्ध नी था सारू
खरदूसण करग्या परदूसण, सुरपणखा कबड्डी खेलै ।।

महगाई सुरसा सी सगळे, दिन दिन वधती हो जावै है
दो नवरचा रै चादो चोखो सोनै रा विस्कुट ल्यावै है
कुम्भकरण सा आप सोयरया, जगा जगा भभट भलै ।।

रावण री वस घणी लाम्बो, या भोला रावण कद मरसी
अगन पूत वणल्यो शंकरसा, अगन वाण धारचा सरसी
झूठी 'रामाण' करया के मिलसी, मिलसी जो माथा मेलै ।।



हलोत्यो

ग्राज हळोत्यो नट मत रैं, हळ कर काटे झटपट रै
तू चला बसाल्यो खट, खटक खट खट
खटक खट खट रै खाती जा
मेह् बावो मोकळो

घररर गरजै मघ, पळळळ पळकै बीज
खळळळ खळकै नाळा म्हे देवा बाजरी बीज
तो होसो धान रा थट
तू चला बसोलो खट

छणणण छाटया माठ छम छम बूटी खोच
गळळळ पी गळवाण्यो, म्हे पूगा खेता बीच
ग्रर करा कमाई इट
तू चला बसोलो खट

खणणण खणकै गै'णा, फररर फहरै चीर
कामण खेत सवार हाळी म्हे बड बीर
तो काळ जावैलो घट
तू चला बसोलो खट

झररर झर पसीनो, लोई बणग्यो नीर
टणमण टाकर टणक है बळद कमाई सीर
म्हे भणा राम री रट
तू चला बसोलो खट



भायला

काम नही, तो काम ब्रेक है, कर बैठे हड़ताल भायला
परजाततंर री पूजा में बजा दिया खड़ताल भायला।

राज आपणो आपां उणरा, अब कुण नै के कहणो है
रोजगार तो नही मिलै पण वोट देण न चाल भायला।
बाड़ खेत नै ही खावै तो, समझ घोर संकट घड़िया
सेवा मींदर ज्यान समझ, बठ खोचलै खाल भायला।

सपन बणाया मेंन्त माळिया, सपना में मखमल नांखी
लीरा लीरा वसतर बागा, ओ काई है हाल भायला।

आपा धापी घणी माच री, खावण री नी स्वाद रह्यो
कुण पुरसै कुण न्यूत जिमाव, महंगाई में माल भायला।
बो झूटो, वा साचो कोनी, कुण पर करा भरोसा कया
राजनीत दल म्हारी निजरा, मछुवारा ह जाळ भायला।

दोहा

गरज गरब न गाळ दे, गरज करावै घात ।
गरज भुलावे फरज नै, गरज गिरज री जात ।।

गजब हुवै गरीबड़ा, गळती री सो गाळ ।
दाणा री दरकार है, दळसी दस मल दाळ ।।

करणा री तो नाम है, कुदरत वर कमाल ।
खारी माटी नीपजै, मीठी गुटक रसाल ।।

ठाला बैठया ठाकरा, सूझै आळ पताळ ।
घर आगण की डूमणी, नाच ना नो ताळ ।।

जलम्यो कठे तू जीवड़ा, कठै बसायो गेह ।
उठी कठा सू वादळी, कठै वरसियो मेह ।।

ऊडा ऊडा समदरा, ऊची ऊची पाळ ।
ऊचा ऊचा डूगरा, नीची नीची ढाळ ।।

—□—

सोरठा

कातर कातर जोड, सोखै दरजी सीवणी
तिणको तिणका ताड, बेर कर सो बावळो
घोवण घाळा घाय, दाग मिटा दे दीठ रो
नेह रै नीर निचाय, जीवण वागो जार का
सुख मे सार समाळ, दुख मे दुरगत दीन की
राख राम रखाळ, पार कर परमसरी
विसवासा मे वास मित्र सदा मन सू कर
हीणा करै हतास, घाला देवै दागला
पच पच थक पचास, समरथ अेक समाळ ले
कात्या वण्यो कपास, मूरख कर दे मिनट मे
अण जाण्या नै जाण, जाण्या नै वे जाणनो
पक्की कर पहचाण, पछ करोजे फेसलो
बिण रा के विसवास, जिण न तू जाणै नही
कद वणसी वो खास, चकमा दे चालाकडो

कवित्व

पीढियो से सघपरत राजस्थान के कवियो ने अनुभूत को अभिव्यक्त
करने के लिए वाणी को ओजस्वी और कोमल सुर प्रदान करने
वाले जिन शब्दो का निर्माण किया उनका उपयोग करते हुए
सुधी पाठको को आनदित करने की सामर्थ्य रखने वाले
कवियो में कल्याणसिंहजी ने जो स्थान बनाया है, जो
ख्याति अर्जित की है, उसका निर्वाह इस सकलन
द्वारा भली भाति हुआ है। राजस्थानी जीवन
के माधुर्य को अधिकार पूर्ण ढग से ढालने
की कला और कौशल अर्जित कर
उन्होने इस सकलन मे हृदय-
ग्राही काव्य प्रस्तुत किया है।

—कैलाशदान शि० उज्वल